

समाचार वाणी

खबर जो करें असर !

नाशिक | Tuesday, 20 October 2026

सौ. ज्योत्स्ना अजित जाधव : अबेकस के माध्यम से महिलाओं को दे रही आत्मनिर्भरता की नई दिशा

Sanket Morankar

Published on 19 Oct 2026



अपने सपनों के साथ दूसरों के भविष्य को भी संवारने की पहल

अपने सपनों को पूरा करने के साथ दूसरों को भी आगे बढ़ने का अवसर देना हर किसी के लिए आसान नहीं होता। महाराष्ट्र के सांगली जिले की सौ. ज्योत्स्ना अजित जाधव की यात्रा इसी सोच का प्रेरक उदाहरण है। पारिवारिक जिम्मेदारियों, शहर बदलने और आर्थिक कठिनाइयों का सामना करते हुए उन्होंने न केवल अपना व्यवसाय स्थापित किया, बल्कि सैकड़ों विद्यार्थियों को सीखने और अनेक महिलाओं को नया करियर शुरू करने की दिशा में मार्गदर्शन भी दिया।

मूल रूप से सातारा जिले की रहने वाली ज्योत्स्ना जाधव ने एम.कॉम. और बी.एड. की शिक्षा प्राप्त की है। विवाह के बाद पति की नौकरी के कारण उन्हें पहले मुंबई और फिर सांगली में बसना पड़ा। नए शहर और नए वातावरण में जीवन की शुरुआत करते हुए भी उनके मन में अध्यापन के प्रति रुचि बनी रही।

अपनी बेटी के लिए अबेकस की कक्षाएँ तलाशते समय उनके मन में विचार आया कि क्यों न वह स्वयं इसकी फ्रेंचाइजी लेकर अपना काम शुरू करें। बच्चों को पढ़ाने और उनके बौद्धिक विकास में योगदान देने की इच्छा ने इस विचार को आगे बढ़ाया।

2015 में 'Success Abacus' के साथ शुरुआत

अपने झुकाव और रुचि को समझने के बाद ज्योत्स्ना ने वर्ष 2015 में 'Success Abacus' की फ्रेंचाइजी लेने का निर्णय किया। शुरुआत में सबसे बड़ी चुनौती आर्थिक संसाधनों की थी। फ्रेंचाइजी लेने के लिए आवश्यक राशि उनके पास नहीं थी। ऐसे समय में उनके भाई ने आर्थिक सहयोग दिया, जिससे उनके सपने को आगे बढ़ने का अवसर मिला।

इसके बाद उन्होंने सांगली के विश्रामबाग क्षेत्र में अबेकस की कक्षाएँ शुरू कीं। शुरुआत छोटी थी—पहली बैच में केवल दस विद्यार्थी थे। नए शहर में परिचित लोगों का दायरा भी सीमित था, इसलिए विद्यार्थियों और अभिभावकों तक पहुँचने के लिए उन्हें अलग-

अलग प्रचार माध्यमों और स्थानीय गतिविधियों का सहारा लेना पड़ा।

उन्होंने अभिभावकों से संवाद बनाए रखा और विद्यार्थियों की प्रगति पर ध्यान केंद्रित किया। धीरे-धीरे लोगों का विश्वास बढ़ा और उनकी कक्षाओं की पहचान बनने लगी। वर्ष 2018 में उन्होंने कक्षाओं के लिए अलग स्थान लिया, जिससे काम को अधिक व्यवस्थित रूप से आगे बढ़ाने में मदद मिली।

कोरोना काल की चुनौती को अवसर में बदला

जब वर्ष 2019-20 के दौरान कोरोना महामारी और लॉकडाउन के कारण शैक्षणिक गतिविधियाँ प्रभावित हुईं, तब ज्योत्स्ना जाधव के सामने भी गंभीर चुनौतियाँ खड़ी हो गईं। उनकी कक्षाओं का काम रुक गया और इसी दौरान उनके पति की नौकरी भी चली गई। सामान्य परिस्थितियों में हर वर्ष लगभग 50 विद्यार्थियों के प्रवेश होते थे, लेकिन महामारी ने इस व्यवस्था को अचानक बदल दिया।

इस कठिन समय में उन्होंने हार मानने के बजाय डिजिटल माध्यमों को सीखने का निर्णय लिया। ऑनलाइन कक्षाएँ शुरू कीं और पहली ऑनलाइन बैच में 35 विद्यार्थियों को जोड़ा। इसके बाद 35-35 विद्यार्थियों की चार बैचें तैयार हुईं।

नई तकनीक सीखकर काम करने के इस फैसले ने उनके शिक्षण कार्य को जारी रखने का रास्ता खोला। कोरोना काल की बाधाओं के बीच उन्होंने अपने काम के तरीके में बदलाव किया और ऑनलाइन प्रशिक्षण के नए अवसर विकसित किए।

विद्यार्थियों के साथ शिक्षकों को भी दे रहीं प्रशिक्षण

आज ज्योत्स्ना जाधव के अनुसार, हर वर्ष कम से कम 50 से 60 विद्यार्थी उनके मार्गदर्शन में अबेकस का प्रशिक्षण लेते हैं। पिछले लगभग 11 वर्षों में वह 500 से अधिक विद्यार्थियों को प्रशिक्षित कर चुकी हैं।

उनका योगदान केवल बच्चों की शिक्षा तक सीमित नहीं है। वह 'Success Abacus' की सांगली जिला प्रमुख के रूप में भी विभिन्न गतिविधियों में भाग लेती हैं। महिलाओं और इच्छुक शिक्षकों को अबेकस, मराठी एवं अंग्रेजी हस्तलेखन और वैदिक गणित की कक्षाएँ संचालित करने के लिए प्रशिक्षण तथा मार्गदर्शन देती हैं। सेमिनार और प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से वह लोगों को शिक्षण क्षेत्र में अपना करियर शुरू करने के लिए प्रोत्साहित करती हैं।

उनके अनुसार, अब तक 100 से अधिक शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया जा चुका है। सांगली, सातारा, कोल्हापुर, मुंबई, नाशिक, नागपुर, रत्नागिरी और गुजरात के विभिन्न क्षेत्रों के शिक्षक भी उनके प्रशिक्षण से जुड़े हैं।

इस प्रकार उन्होंने अपने व्यवसाय को विद्यार्थियों की शिक्षा के साथ-साथ अन्य लोगों के कौशल विकास और रोजगार के अवसरों से जोड़ने का प्रयास किया है।

महिलाओं के लिए सुविधाजनक प्रशिक्षण व्यवस्था

ज्योत्स्ना जाधव की पहल का एक महत्वपूर्ण पक्ष उन महिलाओं को अवसर देना है, जो घरेलू जिम्मेदारियों के कारण नियमित नौकरी नहीं कर पातीं। वह समझती हैं कि घर और परिवार की जिम्मेदारियों के बीच प्रशिक्षण के लिए समय निकालना कई महिलाओं के लिए कठिन हो सकता है।

इसी बात को ध्यान में रखते हुए वह जरूरत के अनुसार देर रात तक प्रशिक्षण देती हैं, ताकि महिलाएँ अपनी सुविधानुसार सीख सकें और पारिवारिक जिम्मेदारियों के साथ अपने करियर की तैयारी भी कर सकें।

उनका सुझाव है कि महिलाएँ सप्ताह के कुछ घंटे देकर अबेकस या हस्तलेखन सुधार की कक्षाएँ शुरू करने पर विचार कर सकती हैं। फ्रेंचाइजी और प्रशिक्षण के माध्यम से अपने कौशल को उपयोग में लाकर वह आय अर्जित करने का प्रयास कर सकती हैं। उनके अनुमान के अनुसार, इस तरह के काम से सालाना लगभग ₹50,000 से ₹60,000 तक की आय संभव हो सकती है; हालांकि वास्तविक कमाई विद्यार्थियों की संख्या, शुल्क, खर्च और स्थानीय मांग पर निर्भर करेगी।

पुरस्कारों और सम्मानों से मिली पहचान

'Success Abacus' संस्था की ओर से ज्योत्स्ना जाधव के काम को समय-समय पर सम्मानित किए जाने की जानकारी दी गई

है। ऑनलाइन माध्यम से सबसे पहले 100 विद्यार्थियों के प्रवेश का लक्ष्य पूरा करने पर उन्हें 'शतकवीर सम्मान' प्रदान किया गया। इसके अलावा, मराठी मनोरंजन जगत के कलाकारों डॉ. अमोल कोल्हे, स्वप्निल जोशी, गश्मीर महाजनी और श्रेयस तलपड़े से भी उन्हें विशेष सम्मान मिलने की जानकारी दी गई है। उनके कार्य के लिए अन्य सम्मान भी प्राप्त हुए हैं।

ज्योत्स्ना अपनी कार्यशैली में लगातार सीखने, मार्केटिंग के नए तरीके समझने और प्रशिक्षण के माध्यम से अपनी क्षमताओं को बेहतर बनाने पर जोर देती हैं। बदलती परिस्थितियों के अनुरूप काम करने की उनकी तत्परता उनके सफर का महत्वपूर्ण हिस्सा रही है।

आत्मनिर्भरता की दिशा में महिलाओं को प्रोत्साहन

आज ज्योत्स्ना जाधव का उद्देश्य केवल अपने व्यवसाय का विस्तार करना नहीं, बल्कि अधिक से अधिक महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने के अवसर उपलब्ध कराने में योगदान देना है। वह चाहती हैं कि जिन महिलाओं ने शिक्षा प्राप्त की है, लेकिन पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण नौकरी नहीं कर पा रही हैं, वे अपने ज्ञान और कौशल को उपयोग में लाने के विकल्प तलाशें।

उनकी यात्रा यह संदेश देती है कि शुरुआत करने के लिए हमेशा बड़े संसाधनों या विस्तृत संपर्कों की आवश्यकता नहीं होती। स्पष्ट लक्ष्य, सीखने की इच्छा, परिवार का सहयोग और लगातार प्रयास किसी छोटे विचार को सार्थक काम में बदलने में मदद कर सकते हैं।

सौ. ज्योत्स्ना अजित जाधव ने अबेकस प्रशिक्षण को अपने लिए उद्यम का माध्यम बनाया और साथ ही विद्यार्थियों तथा महिलाओं के लिए सीखने और आगे बढ़ने के अवसर तैयार करने का प्रयास किया। उनकी कहानी विशेष रूप से उन महिलाओं के लिए प्रेरक है, जो अपनी जिम्मेदारियों के साथ अपनी पहचान और आर्थिक आत्मनिर्भरता भी हासिल करना चाहती हैं।

DISCLAIMER: the views/contents expressed/presented herein, within this advertorial and promotional feature are the sole and exclusive responsibility of individual clients/expert/their authorised representative/Sanket Morankar, to which effect, publication house/its representative/affiliates are not responsible/liable whatsoever.